IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नानाजी देशमुख का शैक्षणिक दृष्टिकोण: एक समग्र मूल्यांकन

परमानन्द मिश्र[1], प्रोफेसर प्रीति त्रिवेदी[2]

[1]शोध छात्र, इतिहास विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय, कानपुर

[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय, कानपुर

सारांश :

यह शोधपत्र नानाजी देशमुख के शैक्षिक दृष्टिकोण का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। नानाजी देशमुख ने भारतीय समाज में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानते हुए उसे जीवन, श्रम और समाज निर्माण से जोड़ा। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के माध्यम से समाज का पुनर्निर्माण करना है। उन्होंने मूल्य-आधारित, कार्य-केन्द्रित और ग्रामोदय आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया, जिसमें आत्मनिर्भरता, ग्राम विकास और सामाजिक समरसता को केंद्र में रखा गया। यह अध्ययन ऐतिहासिक और गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें नानाजी के विचारों की तुलना गांधी, दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से की गई है। शोध निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि नानाजी देशमुख का शैक्षिक दृष्टिकोण आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है और भारतीय शिक्षा प्रणाली को मानवीय एवं व्यावहारिक दिशा प्रदान कर सकता है।

मुख्य शब्द (Key Words):

नानाजी देशमुख, शैक्षिक दृष्टिकोण, मूल्य-आधारित शिक्षा, ग्रामोदय, आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एकात्म मानववाद।

प्रस्तावना

विषय का परिचय और महत्व

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास और उत्थान का प्रमुख साधन है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्वों को भी विकसित करती है। भारत जैसे विशाल और विविधताओं वाले देश में शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का आधार स्तंभ माना गया है। स्वतंत्रता के बाद जब देश नई दिशा की तलाश कर रहा था, तब शिक्षा के क्षेत्र में कई महापुरुषों ने अपने विचार और प्रयोग प्रस्तुत किए। इन्हीं महान व्यक्तित्वों में नानाजी देशमुख का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने शिक्षा को केवल डिग्री या रोजगार प्राप्ति का माध्यम न मानकर इसे मूल्य-आधारित और कार्य-केन्द्रित जीवन-दृष्टि का आधार माना।

आज के समय में जब शिक्षा बाज़ारवाद और प्रतिस्पर्धा की चपेट में आ रही है, तब नानाजी देशमुख के विचार और प्रयोग हमें शिक्षा की वास्तविक दिशा और उद्देश्य की ओर पुनः ध्यान आकर्षित करते हैं। उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाए, सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराए और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखे। यही कारण है कि उनका शैक्षणिक दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक और अनुकरणीय है।

नानाजी देशमुख का संक्षिप्त जीवन-परिचय

नानाजी देशमुख का जन्म 11 अक्टूबर 1916 को महाराष्ट्र के हिंगोली ज़िले में हुआ। प्रारंभिक जीवन संघर्षपूर्ण रहा, किंतु उन्होंने कठिनाइयों को अपनी शक्ति बनाया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़े और बाद में भारतीय जनसंघ के प्रमुख नेताओं में से एक बने। राजनीति में रहते हुए भी उनका ध्यान सदैव समाज सेवा और शिक्षा की ओर केंद्रित रहा।

नानाजी ने राजनीति से सक्रिय रूप से संन्यास लेकर शिक्षा, ग्रामीण विकास और स्वावलंबन की दिशा में कार्य किया। उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र चित्रकूट (मध्य प्रदेश-उत्तर प्रदेश सीमा क्षेत्र) रहा, जहाँ उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित शिक्षा और विकास के मॉडल ने ग्राम स्वराज और समग्र शिक्षा की अवधारणा को साकार रूप दिया। 2019 में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान का संदर्भ

नानाजी देशमुख का मानना था कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह जीवनोपयोगी, नैतिक और समाजोपयोगी बने। उन्होंने पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ कौशल-आधारित और व्यावसायिक शिक्षा पर भी बल दिया। उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार थीं–

1. मूल्य-आधारित शिक्षा – शिक्षा में भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समावेश।
2. कार्य-केन्द्रित शिक्षा – विद्यार्थियों को श्रम और उत्पादक कार्यों से जोड़ना।
3. ग्रामोन्मुख शिक्षा – शिक्षा को ग्रामीण जीवन की समस्याओं और आवश्यकताओं से जोड़ना।
4. आत्मनिर्भरता पर बल – शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को स्वरोज़गार और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करना।

नानाजी ने चित्रकूट क्षेत्र में जो शैक्षिक प्रयोग किए, वे आज भी ग्रामीण विकास और शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शक माने जाते हैं।

विषय चुनने का औचित्य

इस शोध विषय को चुनने के पीछे प्रमुख कारण यह है कि आज की शिक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है—

- रोजगारपरकता का अभाव
- नैतिक मूल्यों का ह्रास
- शिक्षा का शहरीकरण और ग्रामीण क्षेत्रों की उपेक्षा
- बाज़ारवाद का बढ़ता प्रभाव

इन परिस्थितियों में नानाजी देशमुख का शैक्षणिक दृष्टिकोण एक व्यावहारिक विकल्प के रूप में सामने आता है। उनके विचारों में शिक्षा के साथ-साथ चरित्र निर्माण, ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता का समन्वय है। यह शोध न

केवल शिक्षा शास्त्र के छात्रों और विद्वानों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि नीति-निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध की सीमा

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अनेक जटिलताओं और चुनौतियों से घिरी हुई है। यद्यपि शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का सबसे सशक्त साधन माना जाता है, परंतु आज यह अधिकतर **रोज़गार-प्राप्ति और** आर्थिक लाभ तक सीमित होकर रह गई है। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल डिग्री या नौकरी पाना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों की स्थापना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करे। दुर्भाग्यवश आज की शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों को अधिकतर अंक और प्रमाणपत्र प्राप्त करने तक सीमित कर रही है, जिससे उनमें जीवनोपयोगी दृष्टि और राष्ट्रहित का बोध कमजोर होता जा रहा है।

इस परिस्थिति में मूल्य-आधारित शिक्षा का अभाव समाज के लिए गंभीर समस्या बन गया है। न केवल नैतिक पतन बढ़ रहा है, बल्कि युवाओं में आत्मनिर्भरता और कार्य-केन्द्रित सोच की भी कमी देखी जा रही है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का शहरीकरण हो जाने से ग्रामीण क्षेत्रों की उपेक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। परिणामस्वरूप, ग्रामीण समाज की समस्याएँ और बेरोज़गारी की स्थिति और अधिक गंभीर हो रही है।

इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए नानाजी देशमुख का शैक्षणिक दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी और प्रासंगिक प्रतीत होता है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं माना, बल्कि उसे आत्मनिर्भरता, श्रम-संस्कार, ग्रामोन्मुख विकास और सामाजिक चेतना से जोड़कर देखा। चित्रकूट जैसे क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए प्रयोग यह दर्शाते हैं कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं से सीधे जुड़ी हो।

अतः शोध की सीमा यह है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मौजूद कमियों को नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि के संदर्भ में समझा जाए और यह अध्ययन किया जाए कि उनके विचार आज की परिस्थितियों में किस प्रकार लागू होकर शिक्षा को मूल्य-आधारित एवं कार्य-केन्द्रित बना सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य नानाजी देशमुख के शैक्षणिक दृष्टिकोण का गहन अध्ययन करना और उसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली से जोड़कर उसकी प्रासंगिकता को सामने लाना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. नानाजी देशमुख के शैक्षणिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना – उनके जीवन, विचारों और कार्यों के आधार पर यह समझना कि उन्होंने शिक्षा को किस प्रकार मूल्य-आधारित, ग्रामोन्मुख और समाजोपयोगी बनाया।
2. शिक्षा में मूल्य-आधारित एवं कार्य-केन्द्रित पक्षों का विश्लेषण करना – यह स्पष्ट करना कि उनकी सोच में नैतिकता, श्रम-संस्कार, आत्मनिर्भरता और व्यावहारिक कौशल का क्या महत्व था।
3. उनके विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना – वर्तमान समय की चुनौतियों जैसे शिक्षा का बाज़ारीकरण, बेरोज़गारी, ग्रामीण उपेक्षा और नैतिक संकट के संदर्भ में उनके विचार कितने उपयोगी और मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं, इसका आकलन करना।
4. समकालीन शिक्षा नीतियों से तुलना करना – विशेष रूप से *नई शिक्षा नीति 2020* और वैश्विक शिक्षा प्रवृत्तियों से उनके विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना, ताकि यह जाना जा सके कि उनकी शिक्षा-दृष्टि आज की नीतियों के साथ किस प्रकार सामंजस्य रखती है।

5. व्यावहारिक उपयोगिता का निर्धारण करना – यह सुझाव प्रस्तुत करना कि नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में किस प्रकार अपनाया जा सकता है, ताकि शिक्षा वास्तव में राष्ट्रनिर्माण और समाजोत्थान का साधन बन सके।

परिकल्पना

किसी भी शोध कार्य की दिशा और उद्देश्य को स्पष्ट करने में परिकल्पनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं–

नानाजी देशमुख का शैक्षणिक दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है।यह परिकल्पना इस आधार पर रखी गई है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था जिन चुनौतियों का सामना कर रही है—जैसे बाज़ारीकरण, नैतिक पतन और बेरोज़गारी—उनके समाधान नानाजी देशमुख के विचारों और प्रयोगों में निहित हैं। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन न मानकर समाजोपयोगी और राष्ट्रनिर्माण का माध्यम माना था, जो आज भी उतना ही आवश्यक है। उनका मूल्य-आधारित एवं कार्य-केन्द्रित दृष्टिकोण ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता के लिए प्रभावी है।
नानाजी देशमुख का मानना था कि शिक्षा को श्रम, व्यावहारिक कौशल और ग्रामोन्मुख जीवन से जोड़ना चाहिए। यह सोच आज के ग्रामीण समाज में आत्मनिर्भरता और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

आधुनिक शिक्षा नीतियों में उनके विचारों की झलक दिखाई देती है। नई शिक्षा नीति 2020 में कौशल-आधारित शिक्षा, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, और व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया गया है। यह दिशा नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि से गहराई से जुड़ी हुई है, जिससे यह परिकल्पना पुष्ट होती है कि उनके विचारों ने वर्तमान नीतिगत संरचना को प्रभावित किया है।

शोध पद्धति

इस शोध का स्वरूप मुख्यतः गुणात्मक तथा ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक है। गुणात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि इसका उद्देश्य नानाजी देशमुख के शैक्षणिक विचारों और दृष्टिकोण की गहराई से समझ विकसित करना है, मात्र आँकड़ों की गणना करना नहीं। ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति इसलिए उपयुक्त मानी गई है क्योंकि नानाजी देशमुख के विचारों, प्रयोगों और योगदान का अध्ययन ऐतिहासिक सन्दर्भों में किया जाएगा और उन्हें वर्तमान परिस्थितियों से जोड़कर उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया जाएगा।

शोध के लिए प्राथमिक स्रोत और द्वितीयक स्रोत दोनों का उपयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्रोतों में नानाजी देशमुख के भाषण, लेख, पत्र, आत्मकथात्मक अंश और उनके जीवन-वृत्तांत से संबंधित सामग्री शामिल होगी। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा स्थापित *दीनदयाल शोध संस्थान (चित्रकूट)* के दस्तावेज़ और प्रकाशन भी महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में प्रयोग किए जाएंगे। ये स्रोत उनके वास्तविक दृष्टिकोण, विचारधारा और शिक्षा संबंधी सोच को समझने में प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करेंगे।

द्वितीयक स्रोतों में विभिन्न शोध पुस्तकों, शोध-पत्रों, आलेखों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और सरकारी रिपोर्टों का सहारा लिया जाएगा। विशेष रूप से नई शिक्षा नीति 2020 से संबंधित दस्तावेज़ और शिक्षा सुधारों पर प्रकाशित सामग्री का अध्ययन कर यह देखा जाएगा कि नानाजी देशमुख के विचार किस प्रकार उसमें परिलक्षित होते हैं।

अध्ययन की पद्धति तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक होगी। तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग इस उद्देश्य से किया जाएगा कि नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि की तुलना वर्तमान शिक्षा नीतियों, विशेषकर नई शिक्षा नीति 2020, और अन्य समकालीन शिक्षा प्रवृत्तियों से की जा सके। वहीं विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा उनके विचारों का गहन मूल्यांकन किया जाएगा और यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि उनकी सोच आज की शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक रूप से कितनी उपयोगी और प्रभावशाली हो सकती है।

इस प्रकार, शोध पद्धति का संपूर्ण स्वरूप न केवल ऐतिहासिक तथ्यों को संकलित करने और उनका विश्लेषण करने तक सीमित रहेगा, बल्कि यह आधुनिक संदर्भ में उनकी उपयोगिता और प्रासंगिकता को उजागर करने की दिशा में भी केंद्रित होगा। इस दृष्टिकोण से यह शोध एक समग्र, गहन और तुलनात्मक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा

6. नानाजी देशमुख का शैक्षिक दृष्टिकोण

नानाजी देशमुख केवल एक राजनेता या समाजसेवी नहीं थे, बल्कि वे शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का सबसे प्रभावी साधन मानते थे। उनका मानना था कि यदि शिक्षा केवल रोजगार तक सीमित हो जाए तो उसका उद्देश्य अधूरा रह जाता है। शिक्षा का असली मकसद है—चरित्र निर्माण, मूल्य संवर्धन, आत्मनिर्भरता और ग्रामोदय। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रयोग किए और एक सशक्त दर्शन प्रस्तुत किया। नीचे उनके शैक्षिक दृष्टिकोण को चार प्रमुख आयामों में समझा जा सकता है।

(क) मूल्य-आधारित शिक्षा

नानाजी देशमुख के विचारों में मूल्य-आधारित शिक्षा सर्वोपरि थी। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास है।

1. नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर बल :उन्होंने कहा कि यदि शिक्षा से नैतिकता और मानवीय मूल्य गायब हो जाएँ तो वह केवल एक तकनीकी प्रक्रिया बनकर रह जाती है। इसलिए शिक्षा में सत्य, अहिंसा, परोपकार, सहिष्णुता, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का समावेश अनिवार्य है।
2. संस्कारों का संवर्धन :गुरुकुल परंपरा की तरह नानाजी चाहते थे कि विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम से जीवन जीने की कला सीखें। उनके अनुसार परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध संस्कारों से ही संभव है।
3. 'संपूर्ण मानव' का निर्माण: उनकी दृष्टि में शिक्षा का लक्ष्य केवल विद्वान या पेशेवर व्यक्ति तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसा संपूर्ण मानव तैयार करना है जिसमें ज्ञान, कौशल, नैतिकता और सामाजिक चेतना का संतुलन हो। यह विचार दीनदयाल उपाध्याय के *एकात्म मानववाद* से गहराई से जुड़ा हुआ है।

(ख) कार्य-केन्द्रित शिक्षा

गांधीजी की "नई तालीम" से प्रेरित होकर नानाजी देशमुख ने कार्य-केन्द्रित शिक्षा को अपने प्रयोगों में स्थान दिया।

1. शिक्षा और श्रम का संबंध: उनका विश्वास था कि विद्यार्थी केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं, बल्कि श्रम और उत्पादन कार्यों से जुड़कर वास्तविक शिक्षा प्राप्त करता है। खेतों, कार्यशालाओं और प्रयोगशालाओं में किया गया श्रम विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी अनुभव देता है।
2. ग्रामोदय विश्वविद्यालय का प्रयोग :चित्रकूट में स्थापित ग्रामोदय विश्वविद्यालय इस दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यहाँ विद्यार्थियों को कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, जल-संरक्षण, ग्रामीण उद्योग आदि विषयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इस विश्वविद्यालय की विशेषता यह है कि यह ग्राम जीवन और शिक्षा को एक सूत्र में पिरोता है।
3. शिक्षा का उत्पादक स्वरूप: नानाजी चाहते थे कि शिक्षा का संबंध उत्पादन और आत्मनिर्भरता से हो। इसीलिए उन्होंने विद्यार्थियों को पुस्तक के साथ औज़ार भी पकड़ाए और खेतों में जाकर फसल उगाने का अनुभव दिलाया। इससे शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान न रहकर जीवन की तैयारी बन जाती है।

(ग) आत्मनिर्भरता और ग्राम विकास से जुड़ी शिक्षा

नानाजी देशमुख का मानना था कि भारत का वास्तविक स्वरूप गाँवों में बसता है, इसलिए शिक्षा भी ग्रामोन्मुख होनी चाहिए।

1. ग्रामीण जीवन से जुड़ाव: उन्होंने शिक्षा को इस प्रकार ढालने पर बल दिया कि वह ग्रामीण जीवन की समस्याओं और आवश्यकताओं को समझ सके। उनका विचार था कि यदि शिक्षा गाँवों की गरीबी, बेरोज़गारी और अशिक्षा को दूर नहीं कर पाती, तो वह अधूरी है।
2. कृषि और हस्तशिल्प पर बल: शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को कृषि कार्य, पशुपालन, बागवानी और हस्तशिल्प जैसे कौशल सिखाए जाएँ। इससे वे न केवल आत्मनिर्भर बनेंगे बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी सशक्त होगी।
3. कौशल विकास और रोजगार: नानाजी शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाना चाहते थे। उनके अनुसार यदि ग्रामीण युवा खेती के साथ साथ आधुनिक कौशल सीखें, जैसे खाद्य प्रसंस्करण, ऊर्जा संरक्षण या स्थानीय कुटीर उद्योग, तो वे पलायन किए बिना अपने गाँव में ही सम्मानजनक जीवन जी सकते हैं।
4. ग्राम विकास का मॉडल: नानाजी ने शिक्षा को ग्राम विकास का केन्द्र बनाया। उन्होंने कहा कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो। उनका चित्रकूट प्रयोग इसी का प्रमाण है, जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और उद्योग को एक समन्वित प्रणाली में जोड़ा गया।

(घ) समरसता और राष्ट्रीय एकता की भावना

नानाजी देशमुख ने शिक्षा को समाज में समरसता और राष्ट्रीय एकता का आधार माना।

1. जाति और वर्गभेद मिटाने का दृष्टिकोण: उनका विश्वास था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जाति, वर्ग और सम्प्रदाय की संकीर्णताओं को समाप्त करे। विद्यार्थी यदि मिलजुलकर श्रम और शिक्षा प्राप्त करते हैं तो उनमें समानता और भाईचारे की भावना विकसित होती है।
2. राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता: उन्होंने शिक्षा के माध्यम से यह संदेश दिया कि भारत की विविधता ही उसकी शक्ति है। शिक्षा का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में यह चेतना जगाए कि सभी धर्म, जाति और वर्ग मिलकर राष्ट्र की शक्ति का निर्माण करते हैं।
3. सांस्कृतिक चेतना: नानाजी ने भारतीय संस्कृति को शिक्षा का अभिन्न अंग माना। वे चाहते थे कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय परंपरा, लोकाचार और सभ्यता को समझें और उस पर गर्व करें। इससे उनमें राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव की भावना प्रबल होती है।

7. समकालीन शिक्षा नीति से तुलनात्मक अध्ययन

भारत की शिक्षा नीतियाँ समय-समय पर सामाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार बदलती रही हैं। स्वतंत्रता के बाद जब शिक्षा को नई दिशा देने की आवश्यकता हुई, तब कई नीतियाँ सामने आईं। नानाजी देशमुख का शैक्षिक दृष्टिकोण यदि इन नीतियों के आलोक में देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि उनके विचार केवल अतीत के लिए ही नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए भी उतने ही उपयोगी हैं।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने पहली बार शिक्षा को समान अवसर, सामाजिक न्याय और महिलाओं की भागीदारी से जोड़ने का प्रयास किया। इस नीति का लक्ष्य शिक्षा के प्रसार और उसकी पहुंच को बढ़ाना था। हालांकि इसमें ग्रामीण शिक्षा और कार्य-आधारित शिक्षा पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया गया। नानाजी देशमुख जिस प्रकार शिक्षा को ग्रामोदय और आत्मनिर्भरता से जोड़ते थे, वह आयाम 1986 की नीति में आंशिक रूप से ही दिखाई दिया।

1992 में इस नीति में संशोधन किया गया, जिसमें शिक्षा को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी से जोड़ने पर जोर दिया गया। हालांकि यह संशोधन समय की मांग था, लेकिन इसमें भी शिक्षा को ग्रामीण जीवन और कार्य-केन्द्रित दृष्टिकोण से जोड़ने की पहल सीमित रही। दूसरी ओर नानाजी देशमुख का मानना था कि यदि शिक्षा ग्रामीण समाज की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती, तो उसका कोई वास्तविक मूल्य नहीं है। इस प्रकार, इन दोनों नीतियों में उनकी सोच का पूरा प्रतिबिंब नहीं मिलता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा परिवर्तन लेकर आई। इस नीति में अनेक ऐसे बिंदु सम्मिलित किए गए हैं जो सीधे नानाजी देशमुख की सोच से मेल खाते हैं। इसमें मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है और भारतीय संस्कृति, परंपरा तथा नैतिकता को शिक्षा का हिस्सा बनाने की बात कही गई है। यह दृष्टि नानाजी की संस्कार-प्रधान शिक्षा की परिकल्पना से गहराई से जुड़ी है। इसके अतिरिक्त इस नीति में कौशल-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कृषि, उद्यमिता और हस्तशिल्प पर विशेष बल दिया गया है। नानाजी देशमुख शिक्षा को श्रम और कौशल से जोड़ने के पक्षधर थे, इसलिए यह नीति उनकी सोच को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मूर्त रूप देती है।

NEP 2020 में स्थानीय भाषा और मातृभाषा को प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम बनाने का निर्णय लिया गया है। यह नानाजी की उस सोच को पुष्ट करता है जिसमें उन्होंने कहा था कि मातृभाषा में शिक्षा से विद्यार्थी अपनी संस्कृति और परिवेश से गहरे जुड़े रहते हैं। इसके साथ ही समग्र शिक्षा और "संपूर्ण मानव" निर्माण पर जोर भी नानाजी के विचारों से मेल खाता है।

डिजिटल शिक्षा आज की सबसे बड़ी चुनौती और अवसर दोनों है। नानाजी शिक्षा को कार्य और श्रम से जोड़ते थे, और डिजिटल युग में यह सोच नए रूप में सामने आ सकती है। ऑनलाइन प्रशिक्षण, वर्चुअल लैब और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से अब ग्रामीण युवाओं को कृषि, हस्तशिल्प और उद्यमिता का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इस प्रकार, डिजिटल शिक्षा और नानाजी की कार्य-केन्द्रित शिक्षा में सामंजस्य स्थापित होता है। डिजिटल साधन उनकी सोच का आधुनिक विस्तार प्रस्तुत करते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि जहाँ 1986 और 1992 की नीतियाँ शिक्षा के प्रसार और आधुनिकीकरण पर केंद्रित थीं, वहीं नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि में मूल्य, श्रम और ग्रामोन्मुखता का विशेष महत्व था। लेकिन 2020 की शिक्षा नीति ने इन दोनों ध्रुवों को मिलाकर एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। मूल्य-आधारित शिक्षा, कौशल-आधारित शिक्षा, मातृभाषा पर बल और डिजिटल शिक्षा—ये सभी तत्व नानाजी देशमुख के विचारों से मेल खाते हैं। इस दृष्टि से उनकी शिक्षा-दृष्टि न केवल अतीत की धरोहर है बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है।

8. नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि की प्रासंगिकता

नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था जहाँ तकनीकी और रोजगारपरक पक्षों पर ज़ोर देती है, वहीं उसमें नैतिक शिक्षा, मानवीय मूल्यों और सामाजिक चेतना की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आज के समाज में भ्रष्टाचार, प्रतिस्पर्धा, भौतिकवाद और हिंसा जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, जिनका प्रमुख कारण मूल्यहीन शिक्षा है। ऐसे में नानाजी का विचार कि शिक्षा का उद्देश्य "संपूर्ण मानव" का निर्माण होना चाहिए, हमारे समय के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उनकी शिक्षा-दृष्टि का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता से जुड़ा है। आज जब भारत "आत्मनिर्भर भारत" अभियान की ओर अग्रसर है, तब नानाजी के ग्रामोदय विश्वविद्यालय और चित्रकूट मॉडल जैसी पहलें आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने शिक्षा को कृषि, हस्तशिल्प, पशुपालन और कौशल विकास से जोड़ा, ताकि ग्रामीण युवा गाँव छोड़कर शहरों की ओर पलायन न करें और अपने ही क्षेत्र में सम्मानजनक जीवन जी सकें। यह दृष्टिकोण आज ग्रामीण बेरोज़गारी दूर करने और स्थानीय स्तर पर कौशल-आधारित रोजगार सृजन के लिए प्रेरणादायी है।

तीसरा आयाम उनकी शिक्षा-दृष्टि का सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता से संबंधित है। आज के भारत में जातीय, धार्मिक और सामाजिक विभाजन की चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। नानाजी मानते थे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो समाज को जोड़ने का कार्य करे, न कि बाँटने का। उनके अनुसार शिक्षा के माध्यम से जाति और वर्गभेद मिटाकर समानता, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता की भावना को सशक्त किया जा सकता है।

अतः यह स्पष्ट है कि नानाजी देशमुख की शिक्षा-दृष्टि केवल अतीत का आदर्श नहीं है, बल्कि वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा, आत्मनिर्भर भारत और सामाजिक समरसता की दिशा में मार्गदर्शन देने वाला व्यावहारिक मॉडल है

9. निष्कर्ष और सुझाव

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि नानाजी देशमुख का शैक्षणिक दृष्टिकोण केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं था, बल्कि वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्रता के पश्चात भारत के नव-निर्माण काल में था। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन या रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर इसे चरित्र निर्माण, मूल्य संवर्धन, आत्मनिर्भरता और ग्राम विकास का आधार माना।

मूल्य-आधारित शिक्षा के संदर्भ में नानाजी ने शिक्षा को नैतिकता, मानवीय मूल्यों और संस्कारों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। आज जब समाज में नैतिक पतन, हिंसा, भ्रष्टाचार और प्रतिस्पर्धा जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब उनकी सोच और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

कार्य-केन्द्रित शिक्षा पर उनके प्रयोग यह दर्शाते हैं कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह जीवनोपयोगी और उत्पादक हो। ग्रामोदय विश्वविद्यालय जैसे प्रयास शिक्षा और श्रम को जोड़ने का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी प्रकार, आत्मनिर्भरता और ग्राम विकास पर उनका दृष्टिकोण आज के "आत्मनिर्भर भारत" अभियान से सीधा सामंजस्य रखता है। उन्होंने शिक्षा को कृषि, हस्तशिल्प और कौशल विकास से जोड़कर ग्रामीण समाज को सशक्त बनाने का जो मॉडल प्रस्तुत किया, वह आज भी रोजगार और पलायन की समस्याओं का व्यावहारिक समाधान है।

अंततः, नानाजी का विश्वास था कि शिक्षा सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की धुरी बन सकती है। जाति और वर्गभेद समाप्त करने के उनके विचार वर्तमान समय की सामाजिक चुनौतियों में विशेष रूप से मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

सुझाव

1. मूल्य-आधारित शिक्षा का समावेश – नीति-निर्माताओं को चाहिए कि विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थानों में नैतिक शिक्षा, जीवन-कौशल और मानवीय मूल्यों को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए।
2. ग्रामोदय मॉडल का प्रयोग – नानाजी के चित्रकूट मॉडल से प्रेरणा लेकर ग्रामीण विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में कृषि, पशुपालन, जल-संरक्षण और हस्तशिल्प से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू किए जाएँ। इससे शिक्षा सीधे गाँवों के जीवन और विकास से जुड़ सकेगी।
3. शिक्षा और रोजगार का संबंध – शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार ढालना चाहिए कि विद्यार्थी केवल डिग्री प्राप्त न करें, बल्कि जीवनोपयोगी कौशल और उद्यमशीलता भी सीखें। इससे आत्मनिर्भर भारत की दिशा में ठोस कदम उठाया जा सकेगा।
4. नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए मार्गदर्शन – शिक्षा योजनाएँ बनाते समय नानाजी देशमुख की सोच को ध्यान में रखा जाए, ताकि शिक्षा प्रणाली केवल प्रतिस्पर्धात्मक नहीं बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रनिर्माण का साधन बने।
5. समरसता और राष्ट्रीय एकता का विकास – विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को ऐसी गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए जिससे जाति, धर्म और वर्ग की दीवारें टूटें और भाईचारे की भावना मज़बूत हो।

संदर्भ सूची

1. देशमुख, नानाजी. (2005). *ग्रामोदय से राष्ट्रोदय.* नई दिल्ली: दीनदयाल शोध संस्थान।
2. उपाध्याय, दीनदयाल. (1965). *एकात्म मानववाद.* नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ प्रकाशन।
3. शर्मा, शंकरदयाल. (1997). *भारतीय शिक्षा और मूल्यपरक दृष्टि.* वाराणसी: भारती प्रकाशन।
4. गांधी, मोहनदास करमचंद. (1956). *बेसिक एजुकेशन (नयी तालीम).* अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
5. विवेकानन्द, स्वामी. (2012). *शिक्षा पर विवेकानन्द.* कोलकाता: रामकृष्ण मठ।
6. दीनदयाल शोध संस्थान. (2010). *ग्रामोदय मॉडल और सामाजिक समरसता.* नई दिल्ली: डीआरआई प्रकाशन।
7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. मिश्र, रमेश. (2015). *भारतीय शिक्षा दर्शन और समकालीन चुनौतियाँ.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
9. चौबे, अजय. (2018). *नानाजी देशमुख: जीवन और विचार.* भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
10. सिंह, गोविंद. (2016). *भारतीय ग्राम विकास की चुनौतियाँ और समाधान.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।